Language, Dialect and Script

भाषा, बोली और लिपि-

भाषा- यह विचार-विनिमय का एक साधन है। मनुष्य अपने विचारों, भावों, आकांक्षाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। यह सामुदायिक जीवन का एक आधार है। ई० एच० स्टर्टीवेण्ट के शब्दों में, "भाषा मुख से उच्चारित संकेतों की एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग तथा अन्तःक्रिया करते हैं।"

जे० वेण्ड्रीज के अनुसार, "भाषा प्रतीकात्मक चिह्नों की ऐसी पद्धति है जो मानव समाज के वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम है। विभिन्न इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य होने के कारण भाषा इन प्रतीकों की रचना कही जा सकती है।"

भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है जिसमें अनेक भाषाएँ अपने अस्तित्व में आती हैं। भारत में व्याप्त भाषाओं की इस विविधता को ध्यान में रखते हुए अनेक विद्वानों ने सभी भाषाओं को मुख्य तीन भागों में विभक्त किया है- 1. इण्डो-आर्यन भाषाएँ (2) द्राविड़ियन भाषाएँ तथा (3) आस्ट्रिक भाषाएँ।

1. इण्डो-आर्यन भाषाएँ- इसके अंतर्गत 12 भाषाएँ आती हैं- हिन्दी, उर्दू, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बिहारी, पंजाबी, सिन्धी, हिमाली, बंगाली, उड़िया, असामिया।

2. द्राविड़ भाषाएँ-

इसके अंतर्गत चार भाषाएँ सम्मिलित हैं- तेलुगू, तमिल, मलयालम, तथा कन्नड़।

Scanned with CamScanner

ऑस्ट्रिक भाषाएँ ⇒ ये भाषाएँ कई समूहों में विभाजित है, जैसे- छोटा नागपुर, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और बंगाल की भाषा कोल या मुण्डा है। भारत की उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों की भाषा मोनख्मेर है।
इसके अतिरिक्त एक और वर्ग है—
तिब्बती-चीनी भाषाएँ - इसके अंतर्गत मणिपुरी, नेवाड़ी तथा लेपचा आती है। मणिपुरी, मणिपुर में बोली जाती है, नेवाड़ी नेपाल से आकर भारत में बसनेवाले लोग बोलते हैं तथा लेपचा - सिक्किम, दार्जिलिंग तथा नेपाल से लगे कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

भारतीय संविधान द्वारा प्रमुख २२ भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। वे हैं—असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मणिपुरी, कोंकणी, नेपाली, मैथिली, डोगरी, बोडो तथा संथाली। इनमें हिन्दी का स्थान प्रमुख है जिसे देश के लगभग ३० प्रतिशत लोग बोलते हैं।

भाषा की विशेषताएँ

भाषा कोई भी क्यों न हो, वह किसी-न-किसी समुदाय द्वारा स्वीकृत अवश्य होना चाहिए तथा उस भाषा को व्यवहार में लानेवाला समुदाय अवश्य होना चाहिए, तभी भाषा की सार्थकता मानी जाती है।

भाषा का अध्ययन विश्लेषण संभव हो। उसकी अपनी लिपि तथा व्याकरण होना चाहिए ऐसा न होने पर उसे पुस्तकीय रूप देना संभव नहीं है।

भाषा के द्वारा विचारों का विनिमय संभव हो। यह वागेन्द्रियों द्वारा स्पष्ट किया जा सके। परिस्थिति परिवेश के अनुरूप उसका ऐतिहासिक

प्रयोग संभव है।
संसार में जिन भाषाओं का भौगोलिक क्षेत्र जितना विस्तृत है, उसकी उतनी ही बोलियाँ है।
प्रत्येक भाषा की अपनी भाषिक व्यवस्था होती है।

Dialect बोली →

बोली भाषा का लघु रूप है जो सीमित क्षेत्र में रहनेवाले व्यक्तियों द्वारा मौखिक रूप में प्रयोग किया जाता है। इसे किसी व्यक्ति की किसी समय विशेष की अभिव्यक्ति भी कही जाती है। कई बोलियाँ मिलकर भाषा का निर्माण करती है। भारत देश में लगभग 1652 बोलियाँ बोली जाती है। भाषा तथा बोली की मध्यवर्ती रूप को उपभाषा कहा जाता है। यथा- हिन्दी भाषा के पाँच उपभाषा वर्ग माने जाते है, (1) बिहारी उपभाषा वर्ग २) पूर्वी हिन्दी उपभाषा वर्ग (३) पश्चिमी उपभाषा वर्ग (४) राजस्थानी उपभाषा वर्ग (५) पहाड़ी उपभाषा वर्ग।

पुनः, प्रत्येक उपभाषा वर्ग में दो या दो से अधिक बोलियाँ पाई जाती है —

1) बिहारी उपभाषा वर्ग में पाई जानेवाली बोलियाँ है - मैथिली, मगही, भोजपुरी।
2. पूर्वी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोलें - अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी है।
3. पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोलियाँ है - ब्रज, खड़ी, कौरवी, कन्नौजी, बाँगरू, बुन्देली
4. राजस्थानी उपभाषा वर्ग की बोलियाँ है - मेवाती, मालवी, मारवाड़ी, हरौती, जयपुरी।
5. पहाड़ी उपभाषा वर्ग की बोलियाँ है —

Scanned with CamScanner

→ गढ़वाली, कुमाऊँनी, चम्बाली तथा जौनसारी।

संसार में जिन भाषाओं का भौगोलिक क्षेत्र जितना अधिक विशाल है, उसकी उतनी ही अधिक उपभाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। भारत एक बहुधर्मी, बहुसांस्कृतिक, बहुभाषाई लोगों का देश है। अतः यहाँ भी लगभग 544 बोलियाँ बोली जाती हैं।

भाषा और बोली में अंतर

1. भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है जबकि बोली का सीमित।

2. बोली भाषा के अंतर्गत आती है। एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं।

3. भाषा बोलियों का समग्र रूप है।

4. बोली भाषा से उत्पन्न होती है, न कि भाषा बोली से।

5. भाषा का प्रयोग कार्यालय, शिक्षा के क्षेत्र- (विद्यालय, साहित्य, विश्वविद्यालय), प्रशासनिक कार्य क्षेत्र आदि में की जाती है। बोली का प्रयोग लोकसाहित्य, तथा बोल-चाल में की जाती है।

6. बोली का स्वरूप स्वाभाविक होती है, जबकि भाषा का रूप परिष्कृत होती है।

7. भाषा की लिपि होती है, किन्तु बोली की हो भी सकती है और नहीं भी।

Scanned with CamScanner